

आईआईटी इंदौर में दीक्षांत समारोह • विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के पूर्व सचिव व नीति आयोग के सदस्य प्रो. अभय करंदीकर बोले- 2014 में 300 स्टार्टअप थे, आज 2 लाख हुए; इनमें 20 हजार सिर्फ रिसर्च एंड डेवलपमेंट में काम कर रहे, AI बड़े तकनीकी बदलाव लाएगा

भास्कर संवाददाता | इंदौर

देश में इनोवेशन और तकनीक आधारित अर्थव्यवस्था तेजी से आकार ले रही है। 2014 तक देश में महज 250-300 स्टार्टअप हुआ करते थे, वहीं आज इनकी संख्या 2 लाख के पार पहुंच गई है। इनमें से 20 हजार स्टार्टअप सिर्फ रिसर्च एंड डेवलपमेंट से जुड़े कोर सेक्टर में काम कर रहे हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) पर काम कर रही कई कंपनियों के प्रोजेक्ट भी अगले तीन-चार साल में पूरे हो जाएंगे, जिससे देश में एक बड़ा तकनीकी बदलाव देखने को मिलेगा।

यह बात विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के पूर्व सचिव व नीति आयोग के सदस्य प्रो. अभय करंदीकर ने कही। वे शनिवार को इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी) इंदौर के 14वें दीक्षांत समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। समारोह में 111 पीएचडी शोधार्थी, 356 बीटेक,



समारोह में विभिन्न श्रेणियां में सात गोल्ड मेडल, आठ सिल्वर मेडल दिए गए।

146 एमटेक (जिनमें हाइब्रिड एंड इलेक्ट्रिक व्हीकल टेक्नोलॉजी के 19 विद्यार्थी शामिल हैं), 23 एमएस (रिसर्च), 102 एमएससी व एमएसडीएसएम प्रोग्राम के 69 पासआउट शामिल रहे। उत्कृष्ट शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए विभिन्न श्रेणियां में सात गोल्ड मेडल, आठ सिल्वर मेडल व स्नातक स्तर पर शोध एवं नवाचार में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सर्वश्रेष्ठ बीटेक प्रोजेक्ट अवॉर्ड

पुरस्कार प्रदान किए गए। प्रो. करंदीकर ने कहा कि डीप टेक स्टार्टअप्स की जटिल तकनीक विकसित होने में कई साल लग जाते हैं। इसके लिए सरकार और निजी क्षेत्र मिलकर नए अवसर तैयार कर रहे हैं। आने वाले समय में रिसर्च, एंटरप्रेन्योरशिप और इंडस्ट्री कोलैबोरेशन के दम पर भारत दुनिया की एक मजबूत तकनीकी ताकत बनकर उभरेगा।

30 साल आगे की तकनीक पर करना होगा काम

समारोह की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के चेयरमैन और इसरो के पूर्व अध्यक्ष डॉ. के. सिवन ने कहा कि विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए केवल लैब में रिसर्च करना ही पर्याप्त नहीं है। रिसर्च का असली मतलब तभी है, जब उसे उपयोगी तकनीक, प्रोडक्ट और समाज के समाधान में बदला जाए। भविष्य की चुनौतियों और जरूरतों को देखते हुए हमें आज ही 20 से 30 साल आगे की तकनीकों पर काम शुरू करना होगा। भारत के पास अपार संभावनाएं हैं, लेकिन इसके लिए रिसर्च संस्थानों, उद्योगों, निवेशकों और युवाओं के बीच एक मजबूत तालमेल बेहद जरूरी है।

एआई के जरिए और आसान करना है इंसानों का काम

कंप्यूटर इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी हो चुकी है। अब मेरा लक्ष्य पहले कुछ वर्षों तक इंडस्ट्री का अनुभव लेना है। इसके बाद मैं पूरी तरह से एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) की दिशा में काम करूंगा, ताकि तकनीक के जरिए मनुष्यों का काम और भी आसान बनाया जा सके।
- मदन पी., प्रेसीडेंट गोल्ड मेडल (बीटेक)

मैकेनिकल इंजीनियरिंग में करूंगा रिसर्च

पीएचडी के बाद अब मैं मैकेनिकल इंजीनियरिंग के क्षेत्र में ही अपनी रिसर्च आगे बढ़ाऊंगा। इस विषय में शोध के लिए काफी नई संभावनाएं हैं और वर्तमान में इस क्षेत्र में तेजी से तकनीकी बदलाव भी देखने को मिल रहा है।

- अर्पित कुमार सिंह, पीएचडी स्कॉलर (गोल्ड मेडलिस्ट)

संस्थान से बहुत कुछ सीखा, आगे भी करूंगी शोध

पीएचडी करने के दौरान मुझे संस्थान में काफी कुछ नया और व्यावहारिक सीखने को मिला है। अब मैं इसी अनुभव के आधार पर इलेक्ट्रिक इंजीनियरिंग की दिशा में अपना शोध कार्य जारी रखूंगी।

- नबास्मिता फुकन, पीएचडी स्कॉलर (गोल्ड मेडलिस्ट)